

वैदिक साहित्य में निहित शान्ति मूल्य : संघर्ष समाधान के विशेष परिप्रेक्ष्य में

डॉ. प्रभाकर पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक (वैकल्पिक शिक्षा), साँची बौद्ध- भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय चिन्तन में समस्त विभूतियों के सार के रूप में शान्ति को बताया गया है, जिसकी सिद्धि संघर्ष समाधान द्वारा ही सम्भव है। शान्ति प्राप्ति की उत्कट आकांक्षा के कारण शान्ति प्राप्त करने के विविध मंत्रों का उल्लेख प्राप्त होता है जो कालांतर में शान्ति प्राप्ति की एक संपूर्ण पद्धति के रूप में विकसित हुए। वैदिक साहित्य में शान्ति मन्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शान्ति के लिए भाव पर अत्यधिक बल दिया गया है। विविध मंत्र इस बात को स्पष्ट करते हैं कि भावों कि शुद्धता, शुभ्रता और समग्रता से शांति को स्थापित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र वैदिक साहित्य में निहित शांति मूल्य को स्थापित करने वाले विविध संदर्भों की विवेचना पूर्वक संघर्ष समाधान के कल्याणकारी मार्ग का अनुशीलन करता है।

मूलशब्द: भावना, निर्वैरता, आत्यन्तिक, ऋत, ऋचा

प्रस्तावना

भौतिक सम्पन्नता के इस युग में वैयक्तिक शान्ति का अभाव होता जा रहा है। जिसका प्रभाव परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अशान्ति की स्थिति के रूप में दृष्ट होता है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अलगाववाद, आतंकवाद, हिंसा तथा बढ़ते अपराध का मूल कारण अशान्ति ही है। शान्ति के अभाव में जीवन की अर्थवत्ता संदेहयुक्त है और यही कारण है कि आज मनुष्य शान्ति की तलाश में भटक रहा है। इस क्रम में कभी वह विविध प्रकार के मादकों में शान्ति खोजने का प्रयास करता है तो कभी वह वासना की पूर्ति द्वारा शान्ति प्राप्त करना चाहता है। शान्ति शब्द संक्षिप्त होते हुए भी विस्तृत महत्व को रखता है। देखा जाए तो अस्तित्व का आधार शान्ति ही है। व्यक्ति के पास सर्व शक्तियां होने पर भी यदि शान्ति का अभाव है, तो शोक बना रहता है। शान्ति के इस व्यापक महत्व को देखते हुए वैदिक ऋषि व्यक्ति में शान्ति के शाश्वत मूल्यों की स्थापना हेतु उत्सुक रहे हैं। व्यक्ति की चेतना शक्ति को विकसित करने तथा उसके जीवन मूल्यों को निर्धारित कर अनन्त शान्ति के लिए वैदिक ऋषियों का प्रयास सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। सत्य-सदाचरण-मैत्री-करुणा-लोक कल्याण-राष्ट्रहित-वैश्विक एकता- प्रिय भाषण-अहिंसा-सहिष्णुता- आदि वे मानवीय मूल्य हैं जिन पर वैदिक जीवन दर्शन अवलम्बित

होकर अनन्त शान्ति को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता था। सम्प्रति उनकी आत्यन्तिक उपेक्षा का ही परिणाम है कि हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करते हुए स्वयं की शांति को खोकर हीनभावना से ग्रस्त हो चुके हैं।

शान्ति मूल्य का समग्रतावादी दृष्टिकोण

सर्वजन हिताय तथा सर्वजनसुखाय की उदात्त भावना ने वैदिक ऋषियों के हृदय को इतना द्रवीभूत कर दिया कि वे सारे विश्व में शान्ति की स्थापना के लिए प्रार्थना करने लगे। उन्होंने द्यूलोक को शान्तिमय देखने की कल्पना की अंतरिक्ष को शान्त देखना चाहा धरती को शान्ति की जन्मदात्री के रूप में देखने की विराट् कल्पना की, अगाध जलाशयों को शान्ति के धाम के रूप में देखने की परिकल्पना की। ऋषियों ने संसार के समस्त देवताओं को शान्ति की स्थापना में सहयोगी माना। सृष्टि के कण-कण में व्याप्त परमतत्त्व से शान्ति की भावना की। भारतीय मनीषियों के सृष्टि में शान्ति की ऐसी खोज ने सारे विश्व के कल्याण के लिए वेदों में निहित इस शान्ति मन्त्र का उद्घोष किया- ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्ति.....¹

अथर्ववेद में शान्ति सूक्त के 14 मंत्रों में द्रष्टा ऋषि द्यौः पृथिवी, अन्तरिक्ष, जल, औषधि पूर्वरूप, कृतकृत कर्म,

भूत, भविष्य, परमस्थानस्थित ज्ञान युक्त वाणी, परमस्थान स्थित ज्ञान से तेजस्वी मन, पंचेन्द्रिय षष्ठ मन से शान्ति की कामना करता है। वाणी मन प्राण श्रोत्र द्वारा क्रमशः ब्रह्म स्वरूप ऋग्यजुः साम अथर्ववेद में जाने का प्रथम उल्लेख है। अपने दोषों को दूर करने की चर्चा है, समुचित सन्मार्ग की प्रेरणा, ईश्वर से कल्याण की कामना, आनंद की कामना, दुःखनाश की कामना, रक्षा की कामना, सभी इन्द्र, मित्र, वरुण आदिदेवताओं से सुख समृद्धि तथा शान्ति की कामना की गयी है। पृथ्वी और जल से अनुकूल होने के लिए प्रार्थना के साथ-साथ द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल औषधि वनस्पति विश्वदेव ब्रह्मा से प्रार्थना करते हुए सभी प्राणियों एवं समस्त विश्व में शान्ति की कामना है।¹² शान्ति के इस समग्रतावादी दृष्टिकोण के पीछे वैदिक ऋषियों का पिण्ड और ब्रह्माण्ड में अभेद दर्शन रहा है। ईशावास्योपनिषद् में उपलब्ध अधोलिखित मन्त्र शान्ति की भावना से परिपूर्ण है जो समष्टि में भेद रहित पूर्णता को व्यक्त करता है- ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं.....¹³

शान्ति मूल्य का भावनात्मक दृष्टिकोण

प्रमुख सभी उपनिषदों का आरम्भ एवं समाप्ति शान्ति पाठ से होता है। उपनिषदों में वर्णित इन शान्ति मंत्रों को पंचशान्ति मंत्र से भी अभिहित किया जाता है। प्रत्येक शान्ति मंत्र के अन्त में तीन बार शान्ति कहकर तिनों प्रकार के दुःख आध्यात्मिक, आधिदैविक एवम् आधिभौतिक के प्रशमन की भावना की गयी है। कठोपनिषद् में उपलब्ध शिक्षावल्ली में भी शान्ति की भावना अनुस्यूत है- ओम् सहनाववतु.....¹⁴ इस मन्त्र से धरती पर मानव का जीवन शान्तिपूर्ण, सामर्थ्यपूर्ण हो तथा सभी आपस में प्रेम, सौहार्द से रहें ऐसी भावना की गयी है। मैत्री की उदात्त भावना का उल्लेख शान्ति के इन्ही भावों को पोषित करता है। वैदिक ऋषि न केवल देवताओं और मनुष्यों की मित्रता को उपयोगी समझते थे, अपितु सृष्टि के प्रत्येक कण के साथ सह-अस्तित्व एवं मधुर भाव की कामना करते थे।¹⁵ वैदिक ऋषि सर्वदिक निर्बैरता के पोषक थे। अथर्ववेद में अखण्ड एवं चतुर्दिक मैत्री की कामना वाला यह मंत्र प्राप्त होता है-अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्। इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृतिध।¹⁶ इस मंत्र में समस्त राष्ट्र तथा अन्य संगठनों के साथ भी बैर विरोध त्याग की भावना की गयी है। एक अन्य मंत्र में विशाल पृथ्वी को ही बंधु कहा गया है।¹⁷

यजुर्वेद में समस्त प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने की भवना इसी तथ्य को बल प्रदान करता है।¹⁸ वेदों में अहिंसा की उदात्त भावना भी शान्ति मूल्य को संवर्द्धित करता है। वैदिक कवियों ने पितरों के लिए प्रस्तुत एक सूक्त में ऋतज्ञा पितरों को अहिंसक कहा है।¹⁹ एक अन्य मंत्र में पूर्वजों को स्तोता तथा हिंसा एवं पाप आदि से रहित बताया गया है।¹⁰ ऋग्वेद में देवताओं से जिस धन की कामना की गयी है उसकी प्राप्ति का माध्यम अहिंसक हो ऐसी याचना की गई है। इन्द्र से ऋषि याचना करता है कि, हमें ऐसी विपुल समृद्धि प्राप्त हो जो कि कल्याणकारिणी तथा अहिंसित हो।¹¹ हिंसा रहित बुद्धि की याचना करते हुए ऋषि कहते हैं कि मुझे सरला अहिंसक एवं धनाभिलाषिणि बुद्धि प्राप्त हो।¹² ऋग्वेद में मनुष्य एवं पशु आदि सभी की हिंसा का निषेध शान्ति मूल्य की स्थापना करता है। द्रष्टा ऋषि रुद्र से प्रार्थना करता है कि आप हममें से न तो वृद्धों का वध करें और न ही युवकों, बच्चों एवं गर्भस्थ शिशुओं का। आप हमारे माता-पिता और हमारे प्रिय शरीरों की भी हिंसा न करें। छोटी आयु वाले पुत्रों, गौ, अश्वों तथा वीरों का भी वध न करें।¹³ इन प्रार्थनाओं से ऋषियों की न केवल मानव जाति के प्रति अपितु समस्त जीवों के प्रति हिंसा मुक्त शान्ति युक्त मूल्यनिष्ठा का संपोषक है। उपर्युक्त मंत्रों में निहित भावों से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक ऋषि मानवता के उद्धार के लिए 'शान्ति को कितना अनिवार्य और आवश्यक मानते थे। शान्ति की स्थापना के लिए भावना प्रधान मन्त्र शान्ति मूल्य की स्थापना में अत्यंत सहायक है।

शान्ति मूल्य के आनुषंगिक पक्ष

वैदिक साहित्य में ऐसे अनेक मन्त्र उपलब्ध हैं, जो सह-अस्तित्व, विश्वबन्धुत्व, लोकमंगल, सर्वाभ्युद की भावना से युक्त होकर सर्वत्र शान्ति की कामना करते हैं। शान्ति स्थापना के लिए उन सभी आवश्यक मूल्यों को महत्व दिया गया था जिनके अभाव में शांति सम्भव नहीं है। वैदिक जीवन पद्धति में मानवीय आचरण और व्यवहार को संतुलित करने हेतु ऋत की परिकल्पना की गयी थी। ऋत वह नैतिक संस्थान है जहाँ मानवीय मूल्यों का संरक्षण होता है। श्री अरविन्द ने ऋत को सदाचरण का मानदण्ड माना है। अरविन्द के शब्दों में "सब वस्तुओं का सारभूत पदार्थ ऋत है। भौतिक से आध्यात्मिक रूप में परिवर्तन का कारण ऋत ही है। ऋत सूर्य चन्द्र आदि का नियम दिखाई देता है किन्तु वस्तुतः यह आचरण का नियम है।¹⁴ जीवन पद्धति में व्याप्त ये उच्च मानवीय मूल्य

ही थे, जो भारतीय समाज में समन्वय और शान्ति को स्थापित कर रखा था। ऋत के साथ-साथ वैदिक ऋषियों ने सत्य के महत्व को भी मानवीय आचरण के लिए आवश्यक तत्त्व माना। एक मंत्र के माध्यम से वैदिक ऋषि कहते हैं कि सत्य के द्वारा ही पृथिवी स्तम्भित है।¹⁵ अथर्ववेद में कहा गया है कि मनुष्य जैसा देखे वैसा ही बोले।¹⁶

वैदिक समाज में परस्पर एक दूसरे की यथा संभव सहायता करना, दान देना परम मानवीय कर्तव्य समझा जाता था। ऋग्वेद में कहा गया है कि जिसका मन उदार नहीं है उसका भोजन करना व्यर्थ है। जो न तो देवगणों को देता है और न मित्रों को देता है, केवल स्वयं ही भोजन करता है, वह केवल पाप ही खाता है।¹⁷ यजुर्वेद स्पष्ट निर्देश करता है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर को उपस्थित मानकर ही भोग करना चाहिए। वैदिक समाज मन, वाणी और कर्म के सामंजस्य द्वारा शान्ति की स्थापना को सुनिश्चित करना चाहता था।¹⁸ आज विश्व में इसी सहयोग और सद्भाव के अभाव में अशांति का वातावरण है। शान्ति मूल्य की स्थापना में इन मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। देखा जाए तो इन मूल्यों को मानवीय आचरण में लाकर शान्ति आधारित जीवन पद्धति को प्राप्त किया जा सकता है।

संघर्ष समाधान हेतु शान्ति मूल्य

भारतीय चिन्तन में समस्त विभूतियों के सार के रूप में शान्ति को बताया गया है जिसकी सिद्धि संघर्ष समाधान द्वारा ही सम्भव है। वैदिक साहित्य में मन, वाणी और कर्म के सामंजस्य को अत्यधिक महत्व दिया गया है। प्रायः संघर्ष का कारण व्यक्तिगत जीवन में इसका अभाव है जिसकी परिणती अशान्ति के रूप में होती है। व्यक्तिगत जीवन से ऊपर उठकर सामाजिक जीवन में भी वाणी और कर्म की एकता पर पूर्ण बल दिया गया है। ऋग्वेद में स्पष्ट निर्देश है कि जैसे देवता एक मत होकर हवि आदि ग्रहण करते हैं उसी प्रकार मनुष्य भी एक होकर गति करें, एक साथ बोलें तथा सबके मन समान हो।¹⁹ ऐसा होने पर न केवल मानव का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है वरन् समाज भी एकमत होकर प्रगति के शिखर पर पहुंचता है। वैदिक साहित्य में शान्ति मन्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शान्ति के लिए भाव पर अत्यधिक बल दिया गया है। विविध मंत्र इस बात को स्पष्ट करते हैं कि भावों कि शुद्धता, शुभता और समग्रता से शान्ति को स्थापित किया जा सकता है। ऋग्वेद के एक ऋचा के माध्यम से वैदिक ऋषि समता के लिए प्रार्थना करते हैं। चूंकि समता भी

संघर्ष की अनुपस्थिति है अतः इसकी प्रकृति लगभग शान्ति के सदृश्य ही है। ऋषि कहते हैं कि हम साथ चले हमारे बीच संवाद हो और हम समान मन एवं ज्ञान वाले हों।²⁰ समता के इस महनीय भाव के मूल में प्रकृति के आधारभूत तत्त्वों की समता का जिक्र है, जिसके कारण वे पूजनीय हैं। इस मंत्र की मीमांसा करने पर शान्ति के लिए आवश्यक समता को स्थापित करने के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण निर्देश प्राप्त होते हैं जो संघर्ष समाधान के मार्ग को प्रस्तुत करते हैं। मंत्र से यह स्पष्ट है कि शान्ति एक व्यापक अवधारणा है जिसे केवल स्वयं तक संकुचित नहीं किया जा सकता। अर्थात् जब तक हमारे चारों ओर अशांति है, हम शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिए व्यापकता का भाव होना आवश्यक है। इसी बात को एक अन्य मंत्र से भी पुष्टि प्राप्त होती है 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे'²¹ मंत्र के माध्यम से यह कामना किया गया है कि मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ और हम सब आपस में एक-दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें। वैदिक ऋषियों ने इसे अनुभव किया था कि मैत्री की उदात्त भावना ही वैयक्तिक दृढता को पोषित करता है, जो संघर्षयुक्त खण्डित व्यक्तित्व को प्रशमन करता है। ऐसे विशाल भाव के साथ साथ-साथ चलने पर संघर्ष मुक्त शान्ति युक्त समाज की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार वैदिक चिन्तन में भावों की शुद्धता को सबका मूल जानकर इसी पर कार्य करते हुए शान्तियुक्त कल्याणकारी मार्ग पर चलने की बात कही गयी है। स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।²²

वस्तुतः प्राचीन भारतीय समाज प्रकृति की अनंत शक्ति के सुव्यस्थित एवं सुनिश्चित मानकों का पालन करते हुए अपने जीवन में शान्ति और कल्याण का उन्मेश करता था। उदात्त भावों से पुष्ट होकर धर्मानुकूल आचरण और व्यवहार करता हुआ सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन में सुख, वैभव, शान्ति और अभ्युदय को प्राप्त होता था। आधुनिक समय में धर्म आधारित ये मानवीय मूल्य उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वैदिक काल में थे। इनका अनुशीलन निश्चित रूप से समाज में व्याप्त सभी प्रकार के संघर्ष को समाप्त कर शान्ति स्थापना के लिए उपयुक्त है।

संदर्भ

1. यजुर्वेद 36/17
2. अथर्ववेद, काण्ड 19, सूक्त 9
3. ईशावास्योपनिषद्
4. कठोपनिषद्, शिक्षा-वल्लरी

5. वही 7/15/13
6. अथर्ववेद 6/40/3
7. ऋग्वेद 1/164/33
8. यजुर्वेद 36/18
9. ऋग्वेद 10/15/1
10. ऋग्वेद 6/19/4
11. ऋग्वेद 6/22/10
12. ऋग्वेद 7/67/5
13. ऋग्वेद 1/114/7
14. अरविन्द, सीक्रेट आफ वेदाज (वेदरहस्य), पृ-102
तथा 107
15. ऋग्वेद 10/85/1
16. अथर्ववेद 12/1/30
17. ऋग्वेद 10/117/6
18. ऋग्वेद 10/191/4
19. ऋग्वेद 10/191/2
20. ऋग्वेद 10/191/2
21. यजुर्वेद 36-18
22. ऋग्वेद 5/ 51/15